



Cadaver Organ Donor Dhansukhbhai Mitthalbhai Patel



First time in Surat, bone of brain dead man donated

HimanshuBhatt
@imesgroup.com

Surat: The city recorded its first bone donation thanks to a brain-dead patient here on Friday.



Fifty-eight-year-old farmer Dhansukh Patel was hit by a motorcycle near a canal here when he was returning from a gymnasium on May 3. He suffered serious head injury and was rushed to Bardoli Sutarsh Ho-

spital and then to Ashutosh Hospital. He had a blood clot in his brain which was removed by neurosurgeon Dr Ash Desai.

However, he died on May 5 and was declared brain-dead. Dhansukh Patel's wife Nayna, three married daughters Hemangini, Hetal and Nikita awaited for their brother Kevin, who is an IT student in New Zealand, to arrive.

Kevin said I told my family that, "My father's organs should be donated as they can give a new lease of

life to many. Bone donation is a new thing which can give quality life to patients who are suffering from cancer and fractures."

Dr Rajiv Raj Chaudhary, who runs a bone bank and accepted the donation, said, "This is first such case wherein we received bone donation from a brain-dead patient. Bones are taken en masse from the body and undergo major process before they are ready for use. However, unlike other organs, bones have a shelf life of four years."

After ribs, thighs and leg bones were taken from the body, the process to remove muscles took place. Femur, ankle and cheek bones were taken later.

"Once the muscles are removed from the bones, disease checking takes place. The bones are stored in -70 degree centigrade temperature and will be transported to Tata Memorial Hospital in Mumbai. The further cleaning up process on the bones there will ensure that minute blood cells and other tissue cells are also

cleaned up," Dr Chaudhary said.

The bones will be later sent to Bhabha Atomic Research Centre. Here they will be sterilized by passing Gamma rays through them. The whole process is called lyophilisation.

The kidneys harvested from Patel were received by Gandhinagar-based Nayana Chaudhan, 46. His liver was transplanted into Gandhidham-based Ganesh Bhansuhal, 33. His eyes were received by an eye bank.

State's first bone donation takes place in Surat

Along with liver, kidney and eyes, bones of 58 years old Dhansukh Patel were received in donation by Surat based Donate Life

Surat : Gujarat's first bone donation took place in Surat, where ribs, thigh bones and bones of legs – from lower side of knee to foot, of 58 years old patient were accepted by city based hospital. Family members of the brain dead patient also donated eyes, kidneys and liver of farmer in Mahuva taluka of Surat district.

Dhansukh Patel 58, a resident of Dungi village in Mahuva taluka sustained serious head injuries after

an unidentified motorcycle hit him outskirts of Dungi village on May 3. Doctors conducted an operation to remove clotting in Patel's brain, but his condition deteriorated. He was declared brain dead by doctors on May 5. Hospital staff informed city based Donate Life, NGO working for organ donation, to get organs Patel in donation.

"Family members agreed for organ donation and when we explained them importance of bone donation, they readily agreed. Kidneys and Liver were accepted by Ahmedabad based Institute of Kidney Diseases and Research Center (IKRDC), while eyes were donated to Surat based Lokdasha Eye Bank. Bones were donated to

Surat based Ashutosh Hospital," said Nilesh Mandalewala, president of Donate Life.

This was first bone donation of Gujarat. Bones will be transplanted to patients having fracture or patients suffering from severe bone related diseases. Bone transplantation can also be done on patient, who is detected with cancer on his jaws, added Mandalewala.

Rajiv Raj Chaudhary, surgeon at Ashutosh Hospital said: "There are cases, where bone gets damaged and it can't be replaced by steel rods or steel plates. Only human bone can help patients. Donation received by Dhansukh Patel can help 15-18 patients. Till now, no donation of such kind has been recorded in Gujarat."



सुरत में पहला हड्डीदान का किस्सा

ब्रेन डेड के किडनी, लीवर के साथ हड्डीयों का भी किया दान

सुरत का पहला हड्डी दान सुल में

अजीय भंडारदार
सुरत, 06 मई

सुरत, 06 मई: 58 वर्षीय धनुषका पाटेल को सनातनता की हड्डीयों का पहला दान सुल में किया गया है। 58 वर्षीय धनुषका पाटेल को सनातनता की हड्डीयों का पहला दान सुल में किया गया है। 58 वर्षीय धनुषका पाटेल को सनातनता की हड्डीयों का पहला दान सुल में किया गया है।

धनुषका पाटेल के पुत्र धनुषका अशुतोष पाटेल (30 वर्ष) सुरत में ही दान देना के फैसले पर पहुंचे। धनुषका पाटेल को सनातनता की हड्डीयों का पहला दान सुल में किया गया है। 58 वर्षीय धनुषका पाटेल को सनातनता की हड्डीयों का पहला दान सुल में किया गया है।



कैंसर के मरीजों को मिलेगा हड्डीयों का फायदा

सुरत में पहला हड्डी दान का किस्सा है। धनुषका पाटेल को सनातनता की हड्डीयों का पहला दान सुल में किया गया है। 58 वर्षीय धनुषका पाटेल को सनातनता की हड्डीयों का पहला दान सुल में किया गया है।

धनुषका पाटेल के पुत्र धनुषका अशुतोष पाटेल (30 वर्ष) सुरत में ही दान देना के फैसले पर पहुंचे। धनुषका पाटेल को सनातनता की हड्डीयों का पहला दान सुल में किया गया है।

सुरत का पहला हड्डी दान सुल में

धनुषका पाटेल के पुत्र धनुषका अशुतोष पाटेल (30 वर्ष) सुरत में ही दान देना के फैसले पर पहुंचे। धनुषका पाटेल को सनातनता की हड्डीयों का पहला दान सुल में किया गया है।

धनुषका पाटेल के पुत्र धनुषका अशुतोष पाटेल (30 वर्ष) सुरत में ही दान देना के फैसले पर पहुंचे। धनुषका पाटेल को सनातनता की हड्डीयों का पहला दान सुल में किया गया है।

सुरत में पहली बार हड्डी दान

शेन केड एक्टिव ली सिडनी-लीवर से दो लो किंग्स बर्ड किंग्स

सुरत में पहली बार हड्डी दान

सुरत में पहली बार हड्डी दान... (Text continues with details of the event and the donor's story)



प्रोसेसिंग के लिए भेजेंगे मुम्बई

सुरत में पहली बार हड्डी दान... (Text continues with details of the organ donation process)

प्रोसेसिंग के लिए भेजेंगे मुम्बई... (Text continues with details of the organ donation process)



साक्षर विशेष

महुवाना डेनडेड धनसुध पटेलना परिवारे किडनी, लीवर, रक्तशुशो साथे हाडकांनुं पण हाडकांनी मानपता प्रसरापी

सुरतमां हाडकांना दाननो राजथनो सर्वप्रथम किरसो

सुरतमां हाडकांना दाननो राजथनो सर्वप्रथम किरसो... (Text continues with details of the event and the donor's story)

सुरतमां हाडकांना दाननो राजथनो सर्वप्रथम किरसो... (Text continues with details of the event and the donor's story)

दानमां मणोवा हाडकांथी 18 लोकोंने वाला मणथे... (Text continues with details of the event and the donor's story)

साक्षर अग्रेसर... (Text continues with details of the event and the donor's story)



स्टील प्लेट-सगिया मुक्कामांथी मुक्ति... (Text continues with details of the event and the donor's story)

गुजरात की प्रथम घटना : ब्रेन डेड व्यक्ति की अंगों सहित हड्डी का दान



सूरत: गुजरात का पहला मटना दर्ज हुआ है कि जिसमें बोन बैंक को अर्थात कि एक मृत व्यक्ति के हड्डी का डोनेशन किया गया है। सूरत की डोनेट लाइफ संस्था सारा अभी तक किडनी, लीवर, आंख और हृदय के सात इस चार पहले बार हड्डी का दान किया गया। दान सूरत की आशुतोष मल्टी स्पेशलिस्ट होस्पिटल में चल रही बोन बैंक को दिया गया था। कुछ दिन पहले सूरत जिले के महूवा तहसील के डूंगरी गांव में रहनेवाले धनसुखभाई पटेल का बाइक दुर्घटना हो गया था। उन्हें बारडोली की एक निजी अस्पताल में ले जाया गया, जहां उन्हें ब्रेन हेमरेज होने का खुलासा हुआ। इससे अधिक उपचार हेतु उन्हें सूरत की आशुतोष अस्पताल में भर्ती किया गया। गत रोज सुबह के समय डॉक्टर सारा

धनसुखभाई को ब्रेन डेड घोषित किया गया। जिससे डोनेट लाइफ संस्था सारा उनके पैर के दो मजबूत हड्डी तथा दोनों तरफ की चार-चार पसलियों का डोनेशन लिया गया। यह दान सूरत की आशुतोष अस्पताल में चल रही बोन बैंक को दिया गया। धनसुखभाई के शाला कल्पेशभाई पटेल कहते हैं कि हमारे स्वजन भले हमें छोड़कर चले गये हो किंतु उनके जाने के बाद यदि उनके अंग अन्य को नवजीवन दे सकते हैं तो यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है।

जिससे हम यह डोनेशन देने के लिए तैयार हुए। धनसुखभाई के परिवार में उनकी पत्नी है। उनकी दो बेटियां हैं और एक बेटा है। डोनेट लाइफ के प्रमुख निलेशभाई मांडलेंवाला कहते हैं कि सूरत का ही नहीं अपितु गुजरात का यह

पहला घटना है, जहां बोन का दान लिया जा रहा है। अभी तक किडनी, लीवर, आंख और दिल का दान हम लेते थे, किंतु अब बोन भी इतने ही महत्वपूर्ण हो गये हैं, जिससे हमें उनका दान लेना पड़ता है। दुर्घटना में किसी की हड्डी टूटनेवाले तथा हड्डी के कैंसर से पीड़ित लोगों के लिए काफी उपयोगी हो सकता है। ट्रान्सप्लान्ट द्वारा उन्हें ऐसे दान में मिले हड्डी से हमें नया जीवन दिया जा सकता है। आशुतोष अस्पताल के डॉ. राजीवराय चौधरी कहते हैं कि आशुतोष अस्पताल में पिछले 8 वर्ष से बोन बैंक चलता है, किंतु सामने चलकर बोन डोनेशन किया गया हो ऐसा यह पहली घटना है। पहले हम किसी पेशन्ट में कोई हड्डी बेकार हो गया हो तो निकाल लेते थे। इस बार सामने से पेशन्ट सारा दान किया गया है। इस हड्डी को रोकी गे शरीर से निकालने के बाद कुछ निश्चित प्रक्रिया करके उसे संभाल कर रखा जाता है। यह चार वर्ष तक उपयोग में लिया जा सकता है। बोन बैंक में सबसे पहले हड्डी पर कैल्सियम प्रोसेस सूरत में ही किया जाता है उसके बाद अधिक एडवान्स प्रोसेस के लिए उसे मुंबई के टाटा मेमोरियल अस्पताल में भेजा जाता है। हड्डी जिस किसी को चाहिए आशुतोष अस्पताल से निःशुल्क मिलता है। इन हड्डियों का उपयोग सबसे अधिक कैंसर पीड़ितों के लिए होता है।

બ્રેઈનડેડ પ્રોઠના કિડની, લીવર, ચક્ષુ સાથે હાડકાઓનું પણ દાન

(પ્રતિનિધિ દ્વારા) સુરત, યુસ્વાર અકસ્માતમાં ઈજા ખાદ બ્રેઈનડેડ જાહેર થયેલા સુરત શિક્ષણ મહાવિદ્યાલયમાં ઓફિસ કિડની, લીવર, ચક્ષુ સાથે હાડકાનું દાન દાન કરીને નવી પહેલ થઈ છે. હાડકાનું દાન કરવાનો મુજબાતનો આ પ્રથમ કિસ્સો છે.

મહુનાના ડુંગરી ગામમાં રહેતા ૫૮ વર્ષીય પનસુખનાઈ મીઠુલખાઈ પટેલને તા. ૩૦એ સવારે છમમાં જતી વેળા ડુંગરી ગામ પાસે અકસ્માત નડ્યો હતો. ખારડોઈ ખાદ સુરતની માનવી હોસ્પિટલમાં તેમને પડે થતા બ્રેઈનડેડ જાહેર કરવા હતા. જે અંગે જાણ થતાં ડીનેટ ઘાઈફતા પ્રમુખ નિવેશ માડલેવાલાએ પનસુખનાઈના પરિવારજનોને અંગદાન તેમજ હાડકાના દાનનું મહત્વ સમજાવ્યું હતું.

જેને પસંદ પરિવારે મુલક સ્વજનની બે

કિડની, લીવર, ચક્ષુઓ અને હાડકાનું દાન કર્યું હતું. અને કિડની માંથી નવર રોડા જમનાબેન ચૌહાણ (ઉ.વ. ૪૮) તથા લીવર માંથી યમના



મનોજ મુખસદ માનુશાળી (ઉ.વ. ૩૩)માં ટ્રાન્સપ્લાન્ટ કરાવ્યું છે.

આરતમાં સૌ પ્રથમ હાડકાની બેંક પર ટીટમાં મુલ્ટીની ટાટમેમોરીયલ હોસ્પિટલ ખાદ ટિલ્લી અને વેન્ટ્રીમાં શરૂ થઈ હતી. આજે મુજબાતમાં

પ્રથમવાર હાડકાનું દાન મળ્યું છે. પાંચથી, જોનું હાર્ડ અને મુલાની નીચેના હાડકા દાનમાં લેવાયા છે.

હાડકાને સડક ઈવી માર્ડનલ ટીટિલી લાવવામાં સ્કોર કરી મુંબઈની ટાટા મેમોરીયલમાં પ્રોજેક્ટ માટે મોકલાશે. ત્યાં ગામારેવસથી તેને પ્રોસેસ કરી સ્ટરાયલ કરાશે. પ્રોસેસ કરેલા હાડકાઓને ઈવી સુરતની માનવી હોસ્પિટલમાં લવાશે. હાડકાઓનો ઉપયોગ મહ્ટીપર્પઝ છે. મોટા કેકસરના કસમાં આ હાડકા ખૂબ જ ઉપયોગી નીવડે છે. કેન્સરના દર્દીઓ અને હાડકાના અન્ય બીજા દર્દીઓ માટે ભારતમાં કોઈપણ હોસ્પિટલને જરૂર હોય ત્યાં મોકલાશે. આ હાડકાઓને વધુમાં વધુ ૬ વર્ષથી વાપરી શકાય છે.



સુરતમાં સેવાયજ્ઞ : હાડકાંની બેન્કનો પ્રારંભ

(પ્રતિનિધિ દ્વારા, સુરત) સુરત શિક્ષણ મહાવિદ્યાલયમાં ઓફિસ કિડની, લીવર, ચક્ષુ સાથે હાડકાનું દાન દાન કરીને નવી પહેલ થઈ છે. હાડકાનું દાન કરવાનો મુજબાતનો આ પ્રથમ કિસ્સો છે. મહુનાના ડુંગરી ગામમાં રહેતા ૫૮ વર્ષીય પનસુખનાઈ મીઠુલખાઈ પટેલને તા. ૩૦એ સવારે છમમાં જતી વેળા ડુંગરી ગામ પાસે અકસ્માત નડ્યો હતો. ખારડોઈ ખાદ સુરતની માનવી હોસ્પિટલમાં તેમને પડે થતા બ્રેઈનડેડ જાહેર કરવા હતા. જે અંગે જાણ થતાં ડીનેટ ઘાઈફતા પ્રમુખ નિવેશ માડલેવાલાએ પનસુખનાઈના પરિવારજનોને અંગદાન તેમજ હાડકાના દાનનું મહત્વ સમજાવ્યું હતું. જેને પસંદ પરિવારે મુલક સ્વજનની બે



પનસુખનાઈની પત્ની યમનાબેન પુત્ર ડીનેટ અને સંવાલક અન્ય સભ્યોએ અંગદાનની પ્રવૃત્તિની જાણપટી આથી અંગદાનનું મહત્વ સમજાવ્યું. તેજા તેઓને હાડકાનું દાન કરવું છે આ હાડકાને કેન્સરના દર્દીને અને હાડકાના બીજા અન્ય દર્દીઓને મહત્ત્વ પડે ત્યારે પરિવારજનોએ અંગેને અંગેથી અંગે મરે તે માટે ઘડીએ જે ડીનેટ પત્ર અંગેનું દાન થઈ યમુ હોયને માટે આપ અલગ રહે તેમ નિવેશ માડલેવાલાએ જણાવ્યું હતું. પરિવારજનો તેમજ અંગદાનની અને હાડકાના દાનની કંઈકે જાણ નિવેશમાલિકો ભાવદાવાલા ટ્રાન્સપ્લાન્ટ કોર્ડિનેટર ડિપાર્ટમેન્ટ ઘાડા અને કે. પ્રણવ મારોને કારણે ડીનેટ ઈવર કિડની અને લીવરનું દાન લેવા અગત્ય પડે જણાવતે ડીનેટ પટેલ પોલી અને તેમને ડીનેટ આવી બે કિડની અને લીવરનું દાન સ્વીકાર્યું

જ્યારે હાડકાના દાન લેવા માટે આશુપત્રે મહ્ટી હોસ્પિટલની હોસ્પિટલમાં તે સહેલ રાજુ નીપાઈને જણાવ્યું હતું. હાલમાં મેલાલામાં મારેઈ અને કિડની માંથી નવર અકસ્માત મોસાલામ જ્યારે લીવર માંથી યમનાબેન અને કોઈકે મનોજ માનુશાળીમાં ટ્રાન્સપ્લાન્ટ કરી તેમને નવજીવન મળ્યું હતું. માડલેવાલાએ જણાવ્યું કે આજે સુરતમાં કો પ્રથમ વખત સુરતની આશુપત્રે મહ્ટી હોસ્પિટલની હોસ્પિટલમાં કોઈકે પનસુખનાઈ પટેલના પરિવારે તેમજ હાડકાઓનું દાન કેન્સરના વીધી અને તેમને ડીનેટ સુરત લેવામાં આવ્યું હતું. તેમાં પટેલે, જોનું હાર્ડ અને મુલ્ટીની નીચેના હાડકાઓ દાનમાં લેવામાં આયા હતા. આ હાડકાઓને ઘાડા કરીને ટાટ ટિલ્લી ટાટા સ્કોર કરી તેને મુંબઈના અગ્રેક ટાટા મેમોરીયલ હોસ્પિટલમાં પ્રોજેક્ટ કરાવ માટે મોકલાવામાં આવે છે.

મહુવાના બ્રેઈનડેડ ધનસુખ પટેલના કિડની, લિવર, આંખો અને હાડકાંનું અંગદાન કરાયું

સુરત, તા.૬ મહુવા, તાલુકાના ૬૫૨૦ વસ્તી ધરાવતા બેડ વર્ષિય બહુભાઈ પટેલને મહાસ્ત્રાવના પાયામાં ગંભીર ઈલાજ કરી હાથે, કુટુંબી સહયોગે હૃદયિકતામાં મરણે તબીબીય બ્રેઈનડેડ જાહેર કરી ગયા. તે પછી ઈમેલ: વાઈસ કરવા હવે તેમના પિતૃભાઈ સમરેશ પટેલે અને ઈલાજ કરવા શુભાન વિધાને વાહાનું પદ દાન કર્યું હતું.

આ અંગે જાણ મેળવી ઈલાજ કરીને મરણ શુભાન પટેલે, ઈ.સી. (નિષ્કાલ) ગામના વસ્તી બહુભાઈ પટેલના પૌત્ર ઈ.ન.પટેલને જાણવા મેળવે તે પછી તેમણે આ અંગે સહયોગ આપવાની જાહેરાત કરી હતી. આ અંગે ઈમેલ: વાઈસ કરવા હવે તેમના પિતૃભાઈ સમરેશ પટેલે અને ઈલાજ કરવા શુભાન વિધાને વાહાનું પદ દાન કર્યું હતું.

આરોગ્ય હોસ્પિટલમાં સમયાનુકૂળે આમલ કરવામાં આવેલા હૃદયિકતામાં મરણે તબીબીય બ્રેઈનડેડ જાહેર કરી હતી. આ અંગે ઈમેલ: વાઈસ કરવા હવે તેમના પિતૃભાઈ સમરેશ પટેલે અને ઈલાજ કરવા શુભાન વિધાને વાહાનું પદ દાન કર્યું હતું.

મરણ બંધાવ્યા બાદ, પોલીસની સહાયતામાં મહુભાઈના કિડની, લિવર અને આંખો દાન માટે ઈલાજ કરવા શુભાન વિધાને વાહાનું પદ દાન કર્યું હતું.



મહુભાઈના પુત્રી મહાસ્ત્રાવને પુત્ર કેસને કારણે તેમણે મહુભાઈના હાડકાં દાન કરાવ્યાં. આ અંગે ઈમેલ: વાઈસ કરવા હવે તેમના પિતૃભાઈ સમરેશ પટેલે અને ઈલાજ કરવા શુભાન વિધાને વાહાનું પદ દાન કર્યું હતું.

ડુંગરી ગામના ધનસુખભાઈને ગંભીર અકસ્માત નડ્યો હતો. ડોનેટ લાઈફના સંચાલકોની સમજાવટથી પરિવારજનોએ અંગદાન કર્યું



ગુજરાતમાં લડકાં દાનને સીમાચારુ કિસ્સો સુરતમાં મહુવાના બ્રેઈનડેડ ખેડૂતની આંખ, કિડની, લિવરની સાથે હાડકાંનું પણ દાન કરાયું

■ દાનમાં મળેલા લડકાંનો ૪ વર્ષ સુધી ઈક્ષરોગ થઈ શકશે

સુરત, તા.૬ મહુવાના બ્રેઈનડેડ ધનસુખ પટેલના કિડની, લિવર અને આંખો દાન માટે ઈલાજ કરવા શુભાન વિધાને વાહાનું પદ દાન કર્યું હતું. આ અંગે ઈમેલ: વાઈસ કરવા હવે તેમના પિતૃભાઈ સમરેશ પટેલે અને ઈલાજ કરવા શુભાન વિધાને વાહાનું પદ દાન કર્યું હતું.



બ્રેઈનડેડ જાહેર કરાયા બાદ, પોલીસની સહાયતામાં મહુભાઈના કિડની, લિવર અને આંખો દાન માટે ઈલાજ કરવા શુભાન વિધાને વાહાનું પદ દાન કર્યું હતું.

લડકાં ગ્રુપ મેચ કર્યા વિના લડકાં ટ્રાન્સપ્લાન્ટ શક્ય છે. આ અંગે ઈમેલ: વાઈસ કરવા હવે તેમના પિતૃભાઈ સમરેશ પટેલે અને ઈલાજ કરવા શુભાન વિધાને વાહાનું પદ દાન કર્યું હતું.

માથાનક ૪૦ ડિગ્રી પર સ્ટોર કરી મૂલ્યમાં પ્રોસેસ કરવા છે. આ અંગે ઈમેલ: વાઈસ કરવા હવે તેમના પિતૃભાઈ સમરેશ પટેલે અને ઈલાજ કરવા શુભાન વિધાને વાહાનું પદ દાન કર્યું હતું.

પહેલી વખત થયું ગુજરાતમાં અસ્થિનું દાન બ્રેઈનડેડ ધનસુખભાઈ પટેલનાં હાડકાંથી મગજો કેન્સરની ૧૫ વ્યક્તિઓને નવજીવન

સુરત, તા. ૬ : અભાર સુધી બ્રેઈન-ડેડ વ્યક્તિનાં હાર્ટ, કિડની, લીવર, સ્પાઇન સહિતનાં અંગોનાં દાનથી જરૂરિયાત મંદ હર્દીઓને નવજીવન મળતું હતું. પરંતુ રાજ્યનાં હાડકાંનાં દાનની પ્રક્રિયા પણ શરૂ થઈ છે. સુરત જિલ્લાનાં મહુવાનાં બ્રેઈનડેડ ધનસુખભાઈ પટેલ(ઉ.પટ)નાં પરિવારજનોએ તેમનાં હાડકાંનાં દાનની પહેલ કરતાં કેન્સરનાં ૧૫ વ્યક્તિઓને નવજીવન મળશે, તેમ સહીઓએ જણાવ્યું હતું.

ગત વર્ષને સુરત જિલ્લાનાં મહુવાનાં હાડકાંનાં ડોનારો માટે સેલો મનસુખભાઈ પટેલ સમારે શરૂ કરાયા હતાં કલાકે જાનમાં ક્યારે કરીને શરૂ કરવા કહ્યું હતું. ત્યારે ગામની તબીબ મજીદ અજાણ્યા બાર્ડેક માલકે તેઓને ટક્કર મારતાં તેઓ બાર્ડેક વચ્ચે નીચે પડી ગયા હતાં તેઓને માથાનાં ભાગે અંગીર ઈજા પહોંચી હતી. ઈજા સહેતે તેમને બારડોલીની સ્મારક હોસ્પિટલમાં દાખલ કરવામાં આવ્યા હતા.

જ્યાં તેમનું સીટી સ્કેન કરવામાં આવતાં બ્રેઈન ડેમેજ થયું હોવાનું નિકાલ થયું હતું. તેમને વધુ સારવાર અર્થે સુરત શહેરની આસ્પત્રી પ હોસ્પિટલમાં દાખલ કરવામાં આવ્યા હતાં. જ્યાં ન્યુરોસર્જન ડૉ. આશિષ દેસાઈએ કેન્યોટોની કરી તેમનાં મગજમાં જુગા થયેલો લોહીનો ગહો છૂટી જ્યો હતો. જેકે, ત્યારબાદ ગત વર્ષની ન્યુરોસર્જન ડૉ. આશિષ દેસાઈ અને ન્યુરોલોજિસ્ટ ડૉ. અનિલુદ્દ આરએ મનસુખભાઈને બ્રેઈન ડેડ જાહેર કર્યાં હતાં. હોસ્પિટલે ડોનેટ



બાર્ડેક સંસ્થાનાં પ્રમુખ નિલેશભાઈ માં શ્રેવાણી સંપર્ક કરતાં તેઓને ધનસુખભાઈનાં પરિવારજનોને અંગદાન વિશે માહિતી આપી હતી.

ડોનેટ બાર્ડેક સંસ્થા દ્વારા બ્રેઈનડેડ હર્દીનાં અંગોનાં દાન વિશે ગમજણ આપવામાં આવતાં મનસુખભાઈનાં પત્ની નયનાબેન, પુત્ર કેવીન, પુત્રીઓ દેસાઈની, હૈ તલ અને નીડિતા તથા પરિવારજનોએ અંગદાન માટે મંજૂરી આપી હતી. ડોનેટ બાર્ડેક દ્વારા હાડકાંનાં દાન વિશે સમજણતાં તેઓ હાડકાંનું દાન કરવા માટે રાજી થયા હતાં. આ રીતે રાજ્યમાં પહેલી વખત હાડકાંનું દાન કરવામાં આવ્યું હતું.

છેલ્લાં આઠ વર્ષથી સુરતમાં હાડકાંની બેન્ક અસ્તિત્વ મરણે છે, પરંતુ, અભાર સુધી બેન્કમાં હોસ્પિટલોમાંથી ઓપરેશન દરમિયાન જે હાડકાં નીકળતાં તે જમા કરાવવામાં આવતાં હતાં, પરંતુ, પહેલી વખત બ્રેઈન ડેડ વ્યક્તિનાં હાડકાં પણ બેન્ક પાસે આવ્યા છે. નોંધવું કે, હાડકાંને પ્રોસેસ માટે મુંજૂરિ વિષય ટાટા પે મો રિસલ હોસ્પિટલમાં માહત્તલામાં આવે છે. જ્યાં તેને માર્ડીનલ ટ્રાન્સિટ તાપમાનમાં

પ્રોસેસ કરવામાં આવે છે. કેનિફલ પ્રોસેસ માટે તેનું ટ્રાન્સપ્લાન્ટ જરૂરિયાત મંદ હર્દીઓમાં કરવામાં આવે છે. બેન્કમાં જમા કરાવેલાં હાડકાંની લાઈફ ચાર વર્ષની હોય છે.

ડોનેટ બાર્ડેકનાં નિલેશભાઈ જણાવે છે કે બ્રેઈન-ડેડ મનસુખભાઈ પટેલનાં સહીઓથી જે હાડકાં દાન ક્ષેત્રેલાં આજી છે તે સીકળમાં ઓછા ૧૫ કેન્સરનાં પીડિત વ્યક્તિઓને કામે આવશે.

બ્રેઈનડેડ ધનસુખભાઈનાં પરિવારજનોએ કરેલી જાનને કિડનીનું દાન અમદાવાદની ઈન્સ્ટિટ્યૂટ ઓફ કિડની ડીવિઝ એન્ડ રિસર્ચ સેન્ટરની ટીમે સુરત આપીને સીકળ્યું હતું. જાને કિડની ઓપીનગરનાં સહેવારી જનનાબેન ચૌહાણ(ઉ.પટ)માં ટ્રાન્સપ્લાન્ટ કરવામાં આવી છે. જ્યારે લીવર ગાંધીમાનનાં સહેવારી મનોજ ભાનુશાહી(ઉ.પટ)માં ટ્રાન્સપ્લાન્ટ કરવામાં આવ્યું છે. બ્રેઈનડેડ મનસુખભાઈનાં હાડકાંનું દાન કહેરની આસ્પત્રી હોસ્પિટલનાં ડૉ. રાજીવ રાજ ચૌપરી અને તેમની ટીમે સીકળ્યું હતું. જ્યારે યક્ષ્મોનું દાન લોકેટ્ટિ યક્ષ્મોનનાં ડૉ. પ્રકુલ શિલોયાએ સીકળ્યું હતું.

ગુજરાતનો પ્રથમ કિસ્સો: બ્રેઈન ડેડ વ્યક્તિના અંગોની સાથે થયું હાડકાંનું દાન

ડોનેટ લાઇફ સંસ્થાએ ઘોષણા દેમરેજ દર્દીના હાડકાંનું પણ દાન કરી નવો ચીતો શરૂ કર્યો

સુરત, તા. ૬
ગુજરાતનો પહેલો કિસ્સો નોંધાયો છે, જેમાં બોર્ન બેંકને બોર્ન એટલે કે એક મૂલ વ્યક્તિના હાડકાં ડોનેટ કરવામાં આવ્યા છે. સુરતની ડોનેટ લાઈફ સંસ્થા શ્રી અત્યાર સુધી કિડની, લિવર, આંખ અને હૃદયની સાથે આ વખતે પહેલી વખત હાડકાંનું દાન કર્યું હતું. દાન સુરતની આશુતોષ મલ્ટિસ્પેશિયાલિસ્ટ હોસ્પિટલમાં ચાલતી બોર્ન બેંકને આપવામાં આવ્યું હતું. ચોડા દિવસ અગાઉ સુરત જિલ્લાના મહુવા તાલુકાના

ડુંગરી ગામે રહેતા પનસુખભાઈ પટેલને એક બાઉક અકસ્માત નડ્યો હતો. તેમને બારડોલીની એક ખાનગી હોસ્પિટલમાં ખસેડવામાં આવ્યા હતા, જ્યાં તેમને બ્રેઈન ડેમરેજ થયું હોવાનું સામે આવ્યું હતું. આથી વધુ સારવાર અર્થે તેમને સુરતની આશુતોષ હોસ્પિટલમાં દાખલ કરવામાં આવ્યા હતા. ગઈકાલે સવારના સમયે ડોક્ટર દ્વારા પનસુખભાઈને બ્રેઈન ડેડ જાહેર કરવામાં આવ્યા હતા. આથી ડોનેટ લાઈફ સંસ્થાનો

સંપર્ક સાંપવામાં આવ્યો હતો, તેમ જ ડોનેટ લાઈફ સંસ્થા દ્વારા પનસુખભાઈના પરિવારને સમજાવવામાં આવ્યા હતા. પનસુખભાઈના પરિવારે કિડની, લિવર અને આંખોનું તો દાન આપવાનું નક્કી કર્યું છે, પરંતુ તેમણે હાડકાં ડોનેટ કરવા માટેની પણ તૈયારી દર્શાવી હતી. તેપારી દર્શાવતા ડોનેટ લાઈફ સંસ્થા દ્વારા તેમના પગના બે મજબૂત હાડકાં તેમ જ બન્ને બાજુની ચાર-ચાર પાંસળીઓનું ડોનેશન લેવામાં આવ્યું હતું.



ગુજરાતના ઇતિહાસમાં પ્રથમ વખત....

બ્રેઈન ડેડ વ્યક્તિના અંગો ઉપરાંત હાડકાંનું પણ કરાયું દાન

નવમ ડાઉન્ટ. સુરત, તા. ૬ : ગુજરાતનો હાલ પહેલો કિસ્સો નોંધાયેલ વચ્ચે તે બોર્ન બેંક મૂલ વ્યક્તિના હાડકાં ડોનેટ કરવામાં આવ્યા છે. પહેલો ડોનેટ લાઈફ સંસ્થાએ અત્યાર સુધી કિડની, લિવર, આંખ અને હૃદયની સાથે પ્રથમ વખત હાડકાંનું દાન પણ કર્યું હતું. આ હાડકાંનું દાન સુરતની આશુતોષ મલ્ટિસ્પેશિયાલિસ્ટ હોસ્પિટલમાં ચાલતી બોર્ન બેંકને આપવામાં આવ્યું હતું. જિલ્લાના મહુવા તાલુકાના ડુંગરી ગામે રહેતા પનસુખભાઈ પટેલને એક બાઉક અકસ્માત નડતા બાદ તેમને સારવાર માટે બારડોલીની એક ખાનગી હોસ્પિટલમાં ખસેડવા હતા,

જ્યાં તેમને બ્રેઈન ડેમરેજ થયું હોવાનું જણાવવામાં આવ્યું હતું, આ પછી તેમને વધુ સારવાર અર્થે સુરતની આશુતોષ હોસ્પિટલમાં દાખલ કરવામાં આવ્યા હતા. ગઈકાલે સવારે ડોક્ટર દ્વારા પનસુખભાઈને બ્રેઈન ડેડ જાહેર કરવામાં આવ્યા હતા. આથી તેમના પરિવારજનોને ડોનેટ લાઈફ સંસ્થા દ્વારા સમજાવવામાં આવ્યા હતા. પનસુખભાઈના પરિવારે કિડની, લિવર અને આંખોનું તો દાન આપવાનું નક્કી કર્યું છે, પરંતુ તેમણે હાડકાં ડોનેટ કરવા માટેની પણ તૈયારી દર્શાવી હતી. તેપારી દર્શાવતા ડોનેટ લાઈફ સંસ્થા દ્વારા તેમના પગના બે મજબૂત હાડકાં તેમ જ બન્ને બાજુની ચાર-ચાર પાંસળીઓનું ડોનેશન લેવામાં આવ્યું હતું.



મહુવાના ડુંગરી ગામે રહેતા પનસુખભાઈ પટેલને અકસ્માત બાદ બ્રેઈન ડેડ થયું હતું